International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 31-34
www.educationjournal.info
Received: 28-10-2022
Accepted: 30-11-2022

डॉ. सुरेन्द्र सिंह सिनसिनवार
प्राचार्य आनन्द शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

प्रतिभा वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, महाराजा सूरजमल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुरेन्द्र सिंह सिनसिनवार
प्राचार्य आनन्द शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

डॉ. सुरेन्द्र सिंह सिनसिनवार, प्रतिभा वर्मा

सारांश
शिक्षा किसी प्रान्त, राष्ट्र या समाज के सुनहरे भविष्य, वर्तमान की हकीकत तथा अतीत के अनुभवों पर आधारित होता है। जिसप्रकार स्वस्थ शरीर के निर्माण में शुद्ध रक्त का संचार करने वाली धमनियों का स्थान है उसीप्रकार जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का अपरिहार्य स्थान होता है। शिक्षा मानव जीवन के लिए विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा मानव की उन्नति, आधुनिकीकरण और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति की एक कुंजी है। शिक्षा की तड़प आंतरिक प्रेरणा और मानव संसाधन विकास में सहायक है। इसप्रकार शिक्षा मानव जाति के ज्ञान संवर्धन के लिए एवं गर्व के साथ जीवित रहने के लिए एक सतत् प्रक्रिया है। शिक्षा एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति को बदलते सामाजिक परिवेश में ढालकर उसके व्यक्तित्व में निखार लाती है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ब्रह्माण्ड का सृष्टा है। वह परम आत्मा है और उसमें सूक्ष्म सृजनात्मक योग्यताएँ विद्यमान हैं। उसने हम सब को तथा प्रकृति की सभी वस्तुओं को बनाया है। हम सब उसी की सृष्टि हैं। भारतीय दर्शन के अनुसार हम उस परमात्मा के अंश हैं, इसलिए हममें सृजनात्मक योग्यताएँ भी विद्यमान हैं।हम में से कई व्यक्तियों में उच्च स्तरीय सृजनात्मक प्रतिभाएँ होती हैं और यही व्यक्ति कला, साहित्य, विज्ञान, व्यापार, शिक्षण आदि विभिन्न मानवीय क्षेत्रों में संसार का नेतृत्व करते हैं।
पहले सामान्य लोगों का यह विश्वास था कि उपलब्धि के लिए केवल बुद्धि जिम्मेदार है। किन्तु इस क्षेत्र में हुए अनुसन्धान इस तरफ संकेत करते हैं कि बुद्धि का योगदान 50 प्रतिशत से भी कम है। इसका मतलब है कि 50 प्रतिशत से भी अधिक बुद्धि के अलावा अन्य कारकों का भी योगदान है। इन कारकों में गैर बौद्धिक (non-intellectual) बुद्धि, सामाजिक बुद्धि, सांवेगिक बुद्धि, आध्यात्मिक बुद्धि भावनात्मक बुद्धि के अलावा विभिन्न प्रकार के शारीरिक एवं समाज मनोवैज्ञानिक कारकों तथा सृजनात्मकता का नाम आता है जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं।
विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का गुण रहता है तथा इनका उच्च व निम्न स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पर्याप्त प्रभाव डालती है। प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जाएगा। शोध की परिकल्पना है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध हेतु न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राएँ) को लिया गया है। प्रस्तुत शोध भरतपुर शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित है। छात्रों के सृजनात्मकता के आँकड़ों के संग्रहण हेतु बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित "सर्जनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण'' का प्रयोग किया गया है तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के गत वर्ष के प्राप्तांकों का प्रतिशत को लिया गया है। साँख्यिकीय विधियों के रूप में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। सृजनात्मकता प्रमापनी पर प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरान्त निष्कर्ष रूप में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। शोध से प्राप्त निष्कर्ष विद्यार्थियों के लिए, पालकों के लिए, शिक्षकों, शिक्षा नीति निर्धारकों, प्रबंधकों तथा भावी शोधकर्ताओं आदि के लिए उपयोगी साबित होंगे।

कूटशब्दः विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षा

प्रस्तावना
'शिक्षा' शब्द संस्कृत की 'शाक् सामर्थ्ये' अर्थात् 'कर सकना' अर्थ वाली धातु का इच्छार्थक 'सन्' प्रत्यय के योग होने पर भावात्मक संज्ञा रूप है। इसप्रकार शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है – ''शक्तुमिच्छति'' अर्थात् 'कर सकना चाहता है।' इसका भाव है कि किसी कार्य को करने की क्षमता प्राप्त करने की इच्छा का होना ही शिक्षा है।''
संकुचित या संकीर्ण अर्थ के अनुसार शिक्षा का अभिप्राय बालक को विद्यालय में प्रदान की जाने वाली शिक्षा से है। दूसरे शब्दों में, 'बालक को एक निश्चित योजना के अनुसार, एक निश्चित समय तक, एक निश्चित विधि, निश्चित प्रकार का ज्ञान दिया जाता है। विद्यालय में शिक्षक बालक को वही शिक्षा देता है जो समाज व बालक के उन्नयन के लिए आवश्यक है। शिक्षा के इस अर्थ को पारिभाषित करते हुए जे.एस. मैकेंजी लिखते हैं – ''हमारी शक्तियों के विकास और सुधार के लिए

किए गए सचेतन प्रयास ही शिक्षा हैं।'' व्यापक अर्थ में शिक्षा से आशय उस शिक्षा से है जिसे व्यक्ति नित्य नये–नये अनुभवों के द्वारा जन्म से लेकर मृत्यु तक प्राप्त करता है। इस अर्थ में शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। व्यापक अर्थ में हम शिक्षा के जिस रूप को लेते हैं उसे बालक अपनी आजीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। व्यापक अर्थ में हम शिक्षा के जिस रूप को लेते हैं उसे बालक अपनी माँ की गोद से, साथियों, खेल–कूद के मैदान, विद्यालय, मेले, तमाशे, उत्सवों, त्योहारों, धार्मिक क्रिया–कलापों आदि औपचारिक एवं अनौपचारिक साधनों से प्राप्त करता है। यह शिक्षा व्यावहारिक तथा उपयोगी होती है। प्रत्येक विद्यार्थी में भावनात्मक बुद्धि विद्यमान होती है परन्तु इसके अतिरिक्त एक और गुण जो कि प्रत्येक व्यक्ति में कम या अधिक मात्रा में विद्यमान रहता है, वह है सृजनात्मकता। सर्वशक्तिमान ईश्वर ब्रह्माण्ड का सृष्टा है। वह परम आत्मा है और उसमें सूक्ष्म सृजनात्मक योग्यताएँ विद्यमान हैं। उसने हम सब को तथा प्रकृति की सभी वस्तुओं को बनाया है। हम सब उसी की सृष्टि हैं। भारतीय दर्शन के अनुसार हम उस परमात्मा के अंश हैं, इसलिए हममें सृजनात्मक योग्यताएँ भी विद्यमान हैं। परन्तु जैसा कि हम देखते हैं, हम में से प्रत्येक व्यक्ति अनुपम है, इसलिए सभी प्राणियों में एक ही स्तर की सृजनात्मक योग्यता विद्यमान नहीं। हम में से कई व्यक्तियों में उच्च स्तरीय सृजनात्मक प्रतिभाएँ होती हैं और यही व्यक्ति कला, साहित्य, विज्ञान, व्यापार, शिक्षण आदि विभिन्न मानवीय क्षेत्रों में संसार का नेतृत्व करते हैं।

गांधी, लिंकन, भाषा, न्यूटन, शेक्सपीयर, लियानारडो–डा विन्सी आदि सृजनात्मक व्यक्ति थे जिन्होंने अपने–अपने क्षेत्रों में विशिष्ट ख्याति प्राप्त की। इसमें कोई संदेह नहीं कि इनमें ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा थी, परन्तु प्रतिभात्मक योग्यताओं के विकास में शिक्षा तथा वातावरण के प्रभाव की भी अवहेलना नहीं की जा सकती। अच्छी शिक्षा, अच्छी देखभाल, सृजनात्मक व्यक्ति के लिए अवसरों की व्यवस्था, सृजनात्मकता को अंकुरित व पोषित करती है। इसमें माता–पिता, समाज तथा अध्यापक अपनी भूमिका निभा सकते हैं। वे बच्चों के पालन–पोषण तथा उनकी सृजनात्मक योग्यताओं के विकास में सहायता दे सकते हैं।

शिक्षा सीखने की प्रक्रिया का फल है। आदमी हर पल कुछ न कुछ सीखता है। सीखना मानव जीवन की सतत् प्रक्रिया है। किन्तु व्यक्ति व्यवस्थित रूप से शिक्षा विद्यालय में ही अर्जित करजा है। विद्यालय में अर्जित ज्ञान का मापन एवं मूल्यांकन किया जाता है और उसी के आधार पर विद्यार्थियों को अगली कक्षा में प्रवेश दिया जाता है। इसप्रकार कक्षा परिवर्तन कर आगे बढ़ने की प्रक्रिया को शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं।पहले सामान्य लोगों का यह विश्वास था कि उपलब्धि के लिए केवल बुद्धि जिम्मेदार है। किन्तु इस क्षेत्र में हुए अनुसन्धान इस तरफ संकेत करते हैं कि बुद्धि का योगदान 50 प्रतिशत से भी कम है। इसका मतलब है कि 50 प्रतिशत से भी अधिक बुद्धि के अलावा अन्य कारकों का भी योगदान है। इन कारकों में गैर बौद्धिक (non-intellectual) बुद्धि, सामाजिक बुद्धि, सांवेगिक बुद्धि, आध्यात्मिक बुद्धि भावनात्मक बुद्धि के अलावा विभिन्न प्रकार के शारीरिक एवं समाज मनोवैज्ञानिक कारकों तथा सृजनात्मकता का नाम आता है जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पर्याप्त प्रभाव डालती है। प्रस्तुत कार्य इसी कार्य में किया जाने वाला एक प्रयास है।

अध्ययन की आवश्यकता/औचित्य

सृजनात्मकता मानव के क्रिया–कलापों एवं निष्पत्ति के लिए आवश्यक है। सृजनात्मकता किसी भी व्यक्ति की क्रिया में पायी जाती है। समाज में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कार्य या व्यवसाय में सृजनात्मकता का बोध होता है। सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है तथा संसार के प्रत्येक प्राणी में कुछ न कुछ सृजनात्मकता अवश्य होती है। सृजनात्मक योग्यताएँ प्रकृति प्रदत्त होती हैं लेकिन प्रशिक्षण के द्वारा उनको विकसित किया जा सकता है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का गुण विद्यमान रहता है तथा इनका उच्च व निम्न स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पर्याप्त प्रभाव डालता है। यह जानते हुए शोधकर्त्री ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने हेतु इस विषय का चयन किया।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी

इससे तात्पर्य नियमित विद्यालय जाने वाले उन सभी बालक–बालिकाओं से है जो कक्षा 9 व 10 में अध्ययन करते हैं।

सृजनात्मकता

सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नए विचार या नई वस्तु का निर्माण करता है या किसी नयी वस्तु की खोज करता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति की वह योग्यता भी सम्मिलित है जिसके द्वारा वह पूर्व–प्राप्त ज्ञान का पुनर्गठन करता है।

लविनो (1990) के अनुसार – सर्जनात्मकता चीजों को देखने का कार्य करने का एक ऐसा नया तरीका है जिसमें चार घटक होते हैं –

1. प्रवाह (कोई नए विचार उत्पन्न करना)
2. लचीलापन (संदर्भ सरलता से बदल जाना)
3. मौलिकता (कुछ नया उत्पन्न करना)
4. व्याख्या (अन्य विचारों का निर्माण)

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि में दो शब्द हैं – शैक्षिक व उपलब्धि। शैक्षिक शब्द ज्ञान से सम्बन्धित है तथा उपलब्धि ज्ञान के अर्जन से संबंधित है। छात्रों के विद्यालय में अध्ययन विषय सम्बन्धी प्रगति जो कि परीक्षण द्वारा जाँची जाती है, शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का अध्ययन करने के लिए 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है। यह विधि वर्तमान स्थितियों की प्रकृति का स्थूल रूप में वर्णन करने हुए समस्या का उत्तर देने में सर्वाधिक उत्तम है।

न्यादर्श

अनुसंधान कार्य में न्यादर्श का बहुत महत्व है। शोध कार्य समय, साधन तथा सुविधा की कमी के कारण न्यादर्श से आँकड़ों का संकलन कर उनका विश्लेषण कर विवेचन करता है। शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श रूप में माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के 200 विद्यार्थियों को लिया गया है। 200 विद्यार्थियों में 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ सम्मिलित हैं।

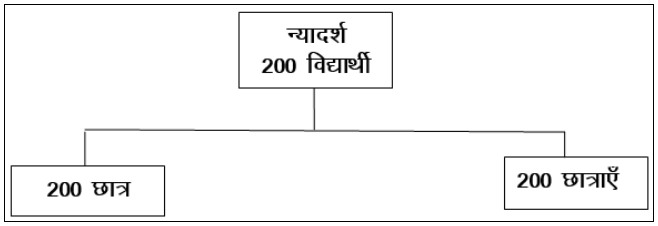

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन – N = 200

चर	माध्य	मानक विचलन	सांख्यिकीय मान		
			त	ज	च
शैक्षिक उपलब्धि	58.70	5.91	+0.016	0.319	झ0ण्05
सृजनात्मकता	62.37	9.89			

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता प्रमापनी पर प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 58.70 तथा 62.37 एवं मानक विचलन क्रमशः 5. 91 तथा 9.89 पाया गया। इनके मध्य सह–सम्बन्ध +0.016 तथा 'टी' मान 0.319 प्राप्त हुआ जो कि टी– मान सारणी के 0.05 सार्थकता मल्य 1.98 से कम पाया गया है। चयनित विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की उनकी शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक एवं असार्थक सम्बन्ध पाया गया। उससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया जाता।

परिकल्पना – ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता'' स्वीकृत की जाती है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा उपकरण के रूप में प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया है। इस शोध में बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित "सर्जनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण'' का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण
4. सह–सम्बन्ध

शोध का परिसीमांकन–

शोध कार्य के लिए शोध की परिसीमाएँ निर्धारित करना आवश्यक है क्योंकि परिसीमाएँ निर्धारित कर देने से परिणाम सही प्राप्त होते हैं इसलिए शोध क्षेत्रों को एक निश्चित सीमा में बाँधा जाता है। परिसीमांकन समय एवं धन की न्यूनता के लिए भी आवश्यक है।

शोधकर्त्री ने शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिसीमाएँ निश्चित की हैं –

1. यह शोध अध्ययन भरतपुर शहर तक ही सीमित रखा गयाा है।
2. प्रस्तुत शोध के लिए माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध के लिए 100 छात्र एवं 100 छात्राओं को शामिल किया गया है।

शोध निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
2. विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान उनकी शैक्षिक उपलब्धि से अधिक पाया गया है।
3. चयनित विद्यार्थियों की सृजनात्मकताकी उनकी शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक एवं असार्थक सम्बन्ध पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

1. प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को विकसित करने में सहायक होगा।
2. प्रस्तुत शोध के माध्यम से शिक्षक छात्रों की सृजनात्मकता के विषय में जान सकेंगे।
3. प्रस्तुत शोध शिक्षकों को शिक्षण प्रक्रिया में सृजनात्मकता को बढ़ाने वाली तकनीकों के प्रयोग के लिए प्रेरित करेगा।
4. प्रस्तुत शोध के माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकेंगे।

भावी शोध हेतु सुझााव

निश्चित समय सीमा व समयानुकूल परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोध अध्ययन सीमित न्यादर्श 200 विद्यार्थियों पर किया गया है, हो सकता है कि इसके परिणाम या निष्कर्ष सामान्यीकरण के स्तर पर सार्थक सिद्ध न हो सकें। वर्तमान समस्या को दृष्टिगत रखते हुए भविष्य में इन पर शोध कार्य किए जा सकते हैं। अतः भावी शोध अध्ययन हेतु कुछ सुझाव निम्नानुसार अपेक्षित हैं –

1. वर्तमान शोध कार्य भरतपुर जिले के विद्यार्थियों को लेकर किया गया है अतः राजस्थान के अन्य जिलों या शहरों के विद्यार्थियों को लेकर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
2. वर्तमान शोध कार्य में 200 विद्यार्थियों को लिया गया। इसमें और अधिक न्यादर्श को लेकर अध्ययन किसा जा सकता है।
3. वर्तमान शोध कार्य में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया है, अतः भविष्य में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्च माध्यमिक एवं महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
4. वर्तमान शोध कार्य में केवल शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों को शामिल किया गया है अतः भविष्य में शहरी क्षेत्र के निजी विद्यालयों, ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों को लेकर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय डॉ० जयनारायण (1995) – भारत का संविधान, सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी इलाहाबाद
2. पाण्डेय के०मी० (1985) – मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी दोआबा हाउस प्रकाशक नई दिल्ली
3. भार्गव महेश (1993) – ''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन'' द्वितीय संस्करण, भार्गव बुक हाउस, राजामण्डी, आगरा – 2

4. सी०वी०गुड व डी०ई० स्केट्स (1954). – मैथड्स ऑफ रिसर्च, ऐप्टीटान, सेन्चुरी क्राफ्ट न्यूयार्क
5. चौहान, एस०एस० – ''उच्च शिक्षा मनोविज्ञान'' विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. गिलफोर्ड, जे०पी० (1978) – फण्डामेण्टल स्टेटिरिटक्स इन साइकोलोजी एण्ड – एजुकेशन, मेग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क
7. गुप्ता, एस०पी० (2001) – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद